P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों एवं कहानियों में स्त्री–विमर्श: नैतिक संदर्भ

अनीता मीना
सहायक आचार्य
हिन्दी विभाग,
रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय,
भरतपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

संस्कृत शब्द का 'नीति' प्रापणार्थक धातु नी (नीञ्) तथा भावार्थ प्रत्यय ति क्तिन् से निष्पन्न होता है। अतः 'पीति' तथा 'अधीति' के समान नीति का अर्थ नयन व प्रापण ही है।[1] किन्तु वर्तमान संदर्भ में प्रायः उचित व्यवहार के रूप में अर्थ प्रयुक्त होता है। संहिताओं, ब्राह्मणों, आरण्यकों तथा उपनिषदों में नीति शब्द स्वतंत्र रूप में नहीं अपितु समासांत में मिलता है। ''ऋषनीति नो वरूणो मित्रो नयतु विद्वान्''

श्रीराम के गुणों का उल्लेख 'रामायण' में महर्षि वाल्मीकि ने इस प्रकार किया है, ''बुद्धिमान् नीतिर्मान् वाग्मी श्रीमान् निबर्हणः।'' राम बुद्धिमान, नीति कुशल, सुवक्ता तथ शत्रुनाशक है। वाल्मीकि ने दशरथ के आमात्यों को 'नीतिशास्त्र विशेषज्ञाः' अर्थात नीतिशास्त्र के विशेष ज्ञाता कहा है। रामराज्याभिषेक के समय मंथरा केकैयी को कहती है। राजा के सभी सुत सिंहासन नहीं हुआ करते अर्थात् राजा नहीं होते हैं। 'स्थाप्यमानेषु सर्वेषु सुमहाननयो भवेत्।

वैदिक काव्यों में अभिजात संस्कृत साहित्य में नीति या नय् शब्द का प्रयोग कई स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत कवि–भास, कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्री हर्ष तथा अन्य कवियों ने प्रयोग किया है। कौटिल्य का नीति सिद्धांत, तुलसीदास के नीति परक दोहे, कबीर के नीतिवचन, बिहारी के नीति, सदाचार, व्यवहार परक दोहे, वृंद की सतसई परक दोहों में नीति की चर्चा की गई है। इन सब में नीति को राजनीति से जोड़ने का प्रयास कर समाज को प्रेरणा दी गई।

मुख्य शब्द : स्त्री विमर्श, नैतिक संदर्भ, नीतिवचन,।

प्रस्तावना

नीति"ाास्त्र के स्वरूप समझने से पूर्व व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन तथा उससे जुड़े सवालों को गंभीरता से समझना अनिवार्य है। कुछ विशेष परिस्थितियों में कोई कर्म करना अथवा नहीं करना, उचित या अनुचित, शुभ–अशुभ, कर्तव्य–अकर्तव्य आदि शब्द वाक्यों में प्रयोग करते है तो इन वाक्यों द्वारा आप क्या कहना चाहते हैं? आप क्या अपने इस प्रकार के निर्णयों को सत्य प्रमाणित करने के लिए तर्क संगत कारण प्रस्तुत करते हैं, यदि हाँ तो वह कौन सा कारण है और उन कारणों को उचित अथवा तर्कसंगत क्यों माना जाना चाहिए। क्या मनुष्य को कुछ कर्म करने या न करने की स्वतंत्रता है? क्या उसे कुछ विशेष कर्मों के लिए उत्तरदायी माना जाता है या आवश्यक है? मानवता के नाते हमारे कर्म क्या हैं? उनका निर्धारण किस प्रकार तथा आधार क्या है? क्या समस्त कर्मों का उददे"य केवल सुख और हित होना चाहिए। जब व्यक्ति और समाज के हितों का संघर्ष होता है, उन्हें किसी विधि से हल करना चाहिए। क्या मानव जीवन का कोई परमलक्ष्य अथवा अंतिम साध्य है?

अध्ययन का उद्देश्य

'पंचतंत्र' और हितोपदेश को इस ग्रन्थों में भी 'नीतिशास्त्र' कहा है। यद्यपि इनकी रचना विवेकहीन और उन्मार्गगामी नृत कुमारों के शिक्षार्थ की गई थी तो भी प्रत्येक विद्वान जानता है कि ये सामान्य नीति से प्रपूर्ण है। यही कारण है कि राजाओं ने इन्हें जनता से भी प्रचारित किया। इससे इतना तो स्पष्ट है कि नीतिशास्त्रों में सामान्य व्यवहार राजनीति से मिश्रित रहता था। सोमदेव के सूत्रात्मक ग्रन्थ 'नीतिवाक्यमृत' के विषयम में भी ज्ञात होता है कि उनकी रचना राजाओं के सुख के लिए हुई थी, परन्तु यह निश्चित रूप से बताना असंभव है कि उनमें भी सामान्य नीति का मिश्रण था या नहीं।

विशय विस्तार

नीति शास्त्र के इतिहास पर ध्यान दें तो सामाजिक जीवन के साथ–साथ किसी न किसी रूप में भी इसका भी जन्म हुआ है। समस्याओं के समाधान में भी सहयोग लिया वहाँ नियमों की आवश्यकता पड़ी जो इच्छाओं, रूचियों व आकांशाओं उद्दे"यों तथा स्वार्थों में होने वाले संघर्ष को कम या समाप्त कर सकें। वस्तुतः सामाजिक परम्पराओं, रूढ़ियों अथवा रीति रिवाजों से ही उस शास्त्र या विज्ञान का विकास हुआ, जिसे आज हम 'नीतिशास्त्र' के नाम से जानते हैं। यही कारण है कि अधिकांश व्यक्ति सामाजिक परम्पराओं तथा नैतिक नियमों में स्पष्ट अंतर नहीं कर पाते। इनका 'नीतिशास्त्र' के साथ अटूट संबंध है, किन्तु आज इसका अर्थ भिन्नरूप में प्रचलित है। अन्य विज्ञानों की भांति नीति को विज्ञान माना है। डॉ. वेदप्रकाश की परिभाषा इस प्रकार है, ''नीतिशास्त्र वह मानवीय आदर्शमूलक विज्ञान है जो सामाजिक जीवन व्यतीत करने वाले सामान्य मनुष्या के आचरण या ऐच्छिक कर्मों पर निष्पक्ष एवं व्यवस्थित रूप से विचार करके उनके संबंध में उचित अनुचित अथवा शुभ अशुभ का निर्णय देने के लिए मापदण्ड प्रस्तुत करता है और निर्णय के आधार के लिए कुछ मूल सिद्धांतों अथवा मानकों या आदर्शों की स्थापना करता है।

नोतिशास्त्र को कुछ विद्वान विज्ञान मानते हैं तथा कुछ विद्वान् आदर्शमूलक विज्ञान मानते हैं। यह केवल मनुष्यों के आचरण पर विचार करता है। वह समाज में रहने वाले सामान्य मनुष्यों के आचरण के संबंध में निर्णय देता है। यह कुछ मूलभूत सिद्धांतों अथवा आधारभूत आदर्शो की स्थापना करता है। विज्ञान की मूलभूत विशेषताओं के कारण इसे विद्वानों ने विज्ञान माना है। विषयवस्तु, घटना यथासंभव पूर्ण क्रमबद्धता, निष्पक्षता, वस्तुनिष्ठता तथा सत्य की खोज करना ही विज्ञान की प्रमुख विशेषता है।

हिन्दी साहित्य में नीति का प्रयोग वैदिककाल से आधुनिक युग में भी प्रयुक्त हो रहा है। कबीर, सूर, वृन्द, तुलसी आदि प्रसिद्ध कवियों की वाणी अनके अंतःकरण से निकली जिसने समाज को प्रेरणा दी इसी कारण आज तक उनके दोहे, दृष्टांतों एवं वाणियों को उन्मुक्त भाव से पढ़ा और गाया जाता है। इनकी नीतिगत रचनाओं में सत्य का महत्त्व है, तुलसी दास ने नीति के संदर्भ में कहा है, सुनमुनीसु कह वचन सप्रीति। कब न राम तुम राखहु प्रीति।[2] सदाचार का उदारण देखिए –

''नीति निपुन जिन्ह कई जग लीका।
घर तुम्हार तिन्ह कर मन नीका ।''

सूरदास ने अपनी बंद आँखों से नीति की बातें कही है व आज भी लोक में प्रचलित है। जिन्हें युगों–युगों तक गाया जायेगा।

''चरनसरोवर माहिं मीन मन, रहत एक रस रीति।
तुम निरगुन बारू पर डारत सूर कौन यह नीति।''

रीति सिद्ध कवि बिहारी के काव्य में भक्ति और नीति का विशेष महत्त्व देखा गया है–

''मीत न नीति गलीतु ह्वै जा धरिये धनु जोरि।
खाए खरचै जो जुरै तो जौरिये करोरि।।''

कोशों में नीति अर्थों को अलग अलग रूप में व्यक्त किया है शुक्र ने राजविद्या (राजनीति) शास्त्र, प्रापण, नय, साम, दाम एवं अर्थ प्रापक व्यवहार, औचित्य चतुराई भरी चाल, भेंट, संबंध सहारा आदि शब्दो के रूप में किया है। वैयक्तिक पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीति, इतर प्राणी संबंधी और मिश्रित संस्कृत आचार्यों के साथ नियमों में आबद्ध होकर बिहारी ने नीति परक दोहे लिखे–

''नहिं पराग नहिं मधुर–मधु नहिं विकास इंहि काल।
अली कली ही सौं बंध्यों आगे कौन हवाल।।''

मैथिली शरणगुप्त व पंत ने भी नीतिगत काव्य–सृजन किया है

''पाकर विशाल कचमार ऐडियाँ धसती।
तब अरूण ऐडियों से सुहास सा डाल।।''

आगे– ''

आज बचपन का कौमल गात
जरा का पीला पात।
चार दिन सुखद चांदनी रात
और फिर अंधकार अज्ञात।।''

मैत्रेयी पुष्पा ने 'नीतिगत' व्यवहार को अपने साहित्य में प्रस्तुत कर मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान की है, 'खुली खिड़कियाँ' इसका ज्वलंत उदाहरण है जो स्त्री सशक्तिकरण हेतु किये प्रयासों को व्यक्त किया है। परिवारों में व्याप्त विषमता, स्त्री पुरूष संबंधों असंतोष, नीति, व्यवहार, सुख, दख आदि का खुलासा किया है। गृहस्थी जीवन में अर्थ का महत्त्व है, "विवाह के घेरे और गृहस्थी के बंद मकानों में उसका बसर है भले आजीवन व्यर्थबोध से छटपटाती रहे।[3] मैत्रेयी विद्रोही साहित्यकार हैं अतः स्त्री होने के कारण माँ, बहिन व पत्नी तीनों रूपों को समझकर विद्रोह स्वरूप अपनाती है। नीति के आधार पर पितृसत्ता की चर्चा करती है 'फाइटर की डायरी' में मनोव्यथा को व्यक्त किया है।

मैत्रेयी का उपन्यास/कथा साहित्य में रूढ़ी व्यवस्था की दासता में पले हुए इन पुरूषों को अपने दासत्व का एहसास दिलाने एवं उनमें व्याप्त अन्याय–अत्याचारिता पर मानवोचित अपराधबोध जगाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल करती है। 'बेतवा बहती रही', 'चाक', 'झूलानट', 'इदनमम्' आदि में स्पष्ट दर्शित होती है। 'चाक' में न्याय अन्याय की लड़ाई, 'विजन' का डॉक्टर आर.पी. शरण। इनके उपन्यासों में संस्कारजन्य पुरातनपंथी और समय प्रदत्त आधुनिकता के बीच झूलते पुरूष जीवन की विडम्बना का यथार्थ अंकन हुआ है। 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में विशेषकर स्त्री जीवन के अनेक पक्षों, सम्पर्कों और भावनात्मक संबंधों का खुलकर चित्रण किया है। वह मानती है कि शास्त्रीय भाषा में 'तिरिया चरित्र' कहा जाता है वह वस्तुतः पुरूषवादी हत्यारी दुनिया में स्त्री के जीवित रहने की राजनीति का दूसरा नाम है।

पारम्परिक नैतिक मूल्य

मैत्रेयी पुष्पा के साहित्य में मूल्यों का अपना महत्त्व है। मूल्य शब्द संस्कृत मूल्यम शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। जो मूलतः अर्थशास्त्र या यों कहें कि राजनीति अर्थव्यवस्था का शब्द है, किन्तु आज इसका विस्तृत क्षेत्र है। अर्थ शास्त्र से इसका प्रवेश दर्शनशास्त्र में हुआ है फिर मनोविज्ञान में तथा मनोविज्ञान से साहित्य

में। "मूल्य की सामान्य परिभाषा है मूल्य किसी वस्तु का वह धर्म (गुण) है, जिसमें कोई वस्तु हमें रूचिकर प्रतीत होती है या पसंद आती है तो हमारे लिए मूल्यवान है ऐसी रूचि या पसंदगी का संबंध प्रथमतः अनुभूति से होता है और अंततः इच्छा तथा प्रवृति से तात्पर्य की मूल्य और अनुभूति यथार्थ है। मानक हिन्दी कोशगत अर्थ है, मूल्य पु. (सं.मूल+यत्) मुद्रा के रूप में उतना धन जा चीज क्रय करने के लिए उसके बदले में किसी को देना पड़ता है। दूसरा वह दर या जिस भाव पर चीज बिकती है तीसरा वह तत्व गुण जो आधार पर किसी भाव का महत्त्व या मान होता है। चतुर्थ वह जो कुछ किसी कारणवशात् झेलना पड़ता है, भुगतान या बलिदान करना पड़ता है जैसे अत्यधिक परिश्रम का मूल्य स्वास्थ्य हानि के रूप में चुकाना पड़ता है।[4]

अमरकोश के अनुसार, ''वाणिज्यंतु वाणिज्यास्यात् मूल्यं वरूनो व्यक्रयः। जिस वस्तु को बेचा जाता है उससे प्राप्त धन को मूल्य और अविक्रय कहते हैं।'' हिन्दी में मूल्य शब्द अंग्रेजी के (Value) के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त होने लगा। लैटिन भाषा के (Volere) शब्द से (Value) शब्द का निर्माण हुआ। टवसमतम का अर्थ है सुन्दर या उत्तम जो उत्तम एवं अच्छा है, (Value) वही है।[5] मानविकी पारिभाषित कोश में यह की प्रत्येक मूल्य जीवन के किसी विशेष क्षेत्र या पहलू से संबंधित है। किसी कार्य तथ्य या सत्ता के विषय में हम यह कह सकते हैं कि उसका नैतिक मूल्य क्या है, लेकिन केवल यह कहना कि वस्तु में मूल्य है कोई अर्थ व्यक्त नहीं करता। इस संदर्भ में हुकमचंद राजपाल का कथन सर्वथा नवीन और उचित है।

जीवन को सम्यक एवं संयमित ढंग से चलाने के लिए विचारकों ने ऐसा अनुभव किया कि जीवन के लिए कुछ मापदण्ड होने चाहिए। उन्हीं के आधार पर जीवन मूल्यों की बात की जाने लगी और जीवन की आन्तरिक एवं बाह्य आवश्यकताओं के आधार पर कुछ कसौटियाँ बनाई गई हैं। ये कसौटियाँ ही मूल्य है। हेम चन्द्र पानेरी भी जीवन की इन कसौटियों को स्वीकार करते हैं तथा उन्हें धारणा मानते हें। चिन्तन से विचार बनते हैं विचारों से धारणा का जन्म होता है तथा धारणा से मूल्यों का निर्माण। किसी एक युग के कुछ मूल्य दूसरे युग में भी उतने ही मूल्यवान रह सकते हैं या फिर एक युग के मूल्य दूसरे किसी युग में बिल्कुल मूल्यहीन समझे जाते हैं। मुल्यों की युगानुरूपता नेमीचन्द्र जैन ने भी स्वीकार की है। प्रत्येक नवीन युग अपने साहित्य, साहित्य ही नहीं जीवन की समस्त सृजनात्मक गतिविधि के नये मानदण्ड लाता है। अज्ञेय व मुक्तिबोध सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जैसे प्रसिद्ध साहित्यकारों ने मूल्य शब्द की भावबोध प्रतिपुष्टि की है। रोहित मेहता ने मानवीय चिंतन धारा से जोड़ा। वे कहते हैं, ''मूल्य न तो किसी मशीन द्वारा उत्पादित वस्तु है और नहीं यह किसी सरकार द्वारा निर्मित कानून है। मूल्य तो जीवन के प्रति एक गुण है, एक अंतर्दष्टि है, एक अवधारक, एक दृष्टिकोण है।

डॉ. नगेन्द्र ने दो प्रकार के जीवन मूल्यों की बात कही है, "आंतरिक मूल्य और सहायक मूल्य। आंतरिक मूल्य के अन्तर्गत व्यक्तिगत मान मर्यादा, यश प्राप्ति की आकांक्षा आदि तत्वों की गणना होती है। सहायक मूल्य आंतरिक मूल्यों की परितुष्टि में सहायता देते हैं। डॉ. नगेन्द्र ने आनन्दवादी मूल्य। 1. आध्यात्मिकां, 2. सौंदर्य मूलक, 3. बौद्धिक, 4. रागात्मक, 5. शारीरिक, 6. सांस्कृतिक, 7. नैतिक, 8. आर्थिक, 9. सामाजिक मूल्य। यहाँ मूल्यों के वर्गीकरण करने से पूर्व मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास/कहानी साहित्य का आलोचनात्मक विश्लेषण करना अनिवार्य है, क्योंकि साहित्यकार की साहित्यिक प्रतिभा और महत्ता रचना में प्रतिपादित मूल्यों पर ही निर्भर करती है। मैत्रेयी ने परिवेश में व्याप्त विसंगतियों एवं उनसे जुड़े मूल्यों का व्यवहारों पर अनुभव किया है आज के युग में बौद्धिकता के कारण वैज्ञानिकता का समाहार हो गया है बनी बनाई रूढ़ियों, अनैतिकता, जातिगत भेद, ग्रामीण परिवेश में व्याप्त असंगतियों पारिवारिक अनैतिक मेलजोल संबंधों व रिश्तों की टूटन भ्रष्टाचार अमानवीयता एवं व्यवस्था में व्याप्त सामंती परिवेश का लेखिका ने विरोध जताया है।

'कस्तुरी कुण्डल बसै' में पूरी तरह मानव मूल्य बोध व नैतिक मूल्यों का ह्यास हुआ है। 'चाक', 'अल्माकबूतरी', 'शीलो व सारंग' जैसे स्त्रियां नैतिक मूल्यों के ह्यास का ही जीवंत प्रमाण है। 'अगनपाखी' उपन्यास के मूल्य नैतिक एंव क्रांतिकारी है जिसमें धार्मिक मूल्यों की टकराहट सुनाई देती है। ''कही ईसुरी फाग'' उपन्यास में जीवन मूल्यों को लोक जीवन से जुड़े व्यवहारों, पर्वों तथा विसंगतियों का उल्टा गढ़ा है। स्त्री जीवन से जुड़े मानदण्डों को बयां करते 'खुली खिडकियाँ', 'सुनो मालिक सुनो' फाइटर की डायरी में स्त्री स्वाधीनता का दस्तावेज है और अब छोटा–सा किस्सा किताब का में जीवन से जुड़े मूल्यों की प्रतिपुष्टि संकलित है।

जनजीवन की असंख्य अंतवर्ती धाराओं का जितना ज्ञान मैत्रेयी को है, उतना बहुत कम लेखकों को होता है। 'त्रिया हठ' सहजतापूर्वक उन समस्त मूल्यों व उससे जुड़े प्रश्नों या संदर्भों को प्रकट करता है। जैसे पंचायती चुनावों में महिला आरक्षण, स्त्री शिक्षा, स्त्रियों को जमीन में हिस्सा, बेरोजगारी, डाकू समस्या, ग्रामीण व्यवस्था पर पुरूषों की प्रेत छाया। डॉ. अशोक के अनुसार मैत्रेयी स्त्री अस्मिता का जो युद्ध लड़ रही है, उसकी नैतिकता सर्वाधिक मूल्यवान है। 'विजन' में पितृसत्तात्मकता स्त्री पुरूष के नैतिक मूल्यों का उदाहरण है विवाह,, ''पुरूष को ऊँचाइयाँ देकर मार डालती है और स्त्री को अज्ञात निचाइयाँ।'' मूल्यों का संक्रमण देखिए जिसमें स्त्री की कोख'' बहू का मतलब है वंश बढ़ाने वाली माता। जो मानवीय मूल्यों पर स्त्रियोचित गुणों का लेवल चस्पा कर स्त्री से फ्लोरेंस नाइटिंगेल और मदर टेरेसा बनने की मांग करती है और पुरूष को अपने परिवार से नभि भी टूटने नहीं देती। यदि नेहा को अजय अपना पति न लगाकर ''खालिस अपने पापा का बेटा शरण आई सेंटर का उत्तराधिकारी मानते हैं। मकरंद, मंदा जैसे पात्र है जिन्होनें सामाजिक, आर्थिक मूल्यों के साथ नैतिक मूल्यों का भी साथ नहीं छोड़ा है। मंदा कुँआरी है वह देह भूख की प्रतीति को स्वीकार करती है तथा मकरंद के प्रणय पर्यन्त अपनी नैतिकताओं की सीमाओं का उल्लंघन नहीं करती हैं अपने इस आचरण के बावजूद प्रेम व

कुसुमा भाभी की दैहिक भूख का विरोध नहीं करती है। कुसुमा भाभी का व्यक्तित्व परिवार व समाज की परिभाषा में सामान्य व गौण होते हुए भी साहित्यिक मूल्यवता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। जयपुर की शिवानी व भंवरी देवी प्रकरण या भंवरी हत्या प्रकरण, दिल्ली की मोनिका, गोखले छात्रावास जयपुर में घटित घटनाएं समकालीन परिवेश में व्याप्त नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ाते दिखाई दे रहे हैं। मैत्रेयी ने भी समाज में व्याप्त अनैतिक कृत्यों की शिकार मन्दा व सुगना (पात्र) का बलात्कार, न जाने कितनी स्त्रियों की दशा को तथा उनसे जुड़े नैतिक मूल्यों को उजागर करती हैं ये गाथाएँ।

स्त्री जीवन में हर स्तर पर बाधाओं का अम्बार मिलता है। लेखिका का दृष्टिकोण स्त्री को अपने अस्तित्व की पहचान करवाना ही प्रमुख ध्येय रहा है। ग्रामीण जीवन में व्याप्त विसंगतियों व शहरी जीवन में होने वाली विषमताओं, प्रेमविवाह, बहुविवाह, विधवा विवाह, परपुरूष संबंध आदि विषयों की प्रतिपुष्टि की है प्राकृतिक भिन्नता होने के बाद भी उसे वैचारिक स्वतंत्रता नहीं है, अतः संतुलित जीवन दृष्टि ही स्थायी होती है। अतः प्रबुद्ध समाज उन्हीं मूल्यों को स्वीकार करेगा जो सामाजिक संतुलन को प्रश्रय देंगे।

नारी जीवन व उससे जुड़े नैतिक मूल्यों को मैत्रेयी ने अम्मा, कुसुमा भाभी का युग्म तथा बहू व अम्मा का युग्म। विवाहेत्तर प्रेम संबंधों की वैधता जैसे ज्वलंत प्रश्नों को उठाकर अम्मा (प्रेमा) व कुसुमा दोनों की भिन्न दष्टियों का परिचय दिया है। पति व ससुर की मांगों की पूर्ति में असमर्थ। पति, पिता की सहमति से दूसरा विवाह कर लेता है। यहाँ सौतन से आहत कुसुमा के नैतिक मूल्यों का ह्यास स्पष्ट है। यौन सम्बन्धों व उनसे जुड़े नैतिक जीवन मूल्यों की चर्चा असफलत पति जो कि सुहाग रात को ही रति सुख में असमर्थ है और उसकी यौन पिपासा को जाग्रत कर उसे राह में छोड़ता है। मैत्रेयी रूढ़िवादी विचारों की विरोध कर वास्तविक मूल्यों की चर्चा करती है। कस्तूरी के माध्यम से चारदीवारी से बाहर निकलने की जरूरत करती है, ''ससुर उनके विरोधी नहीं सहयोगी हुए ..... बहु विधवा थी तो ससुर बेटे की मौत से परेशान दोनों एक दुःख के खूंटे बन्धे हो जैसे। एक दूसरे से झगड़ते कैसे, एक दूसरे के दुःख को समझ रहे थे।

यहाँ लेखिका ने कस्तूरी को आधुनिक विचारों वाली जांबाज स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया है। अकेलेपन में स्त्री होने का नुकसान स्वयं लेखिका ने भी भोगा है। बचपन में हवस का शिकार हुई। संरक्षिकाऐं भी संरक्षण न दे सकीं। प्राचार्य, मा का बी.डी.ओ. या अकाउण्टेंट, बस का ड्राइवर प्रत्येक ने नौचा दबोचा किन्तु उनसे बच निकली। यहाँ नैतिक जीवन मूल्यों का पतन स्वयं के साथ घटित घटनाओं की प्रतिपुष्टि है।

औरत की दुश्मन उसकी देह नहीं, बल्कि मर्द का वह अंग है जो औरत पर सोते जागते हमले की तैयारी में रहता है। "एदल्ला मित्र, साईकिल पर आगे बिठाकर फ्राक में होकर जांघो पर हाथ फेरता है। जदीश, संयोजिता का बेटा, अलीगढ़ म खुर्राट हरकत आगे चली, मैत्रेयी चिल्ला पड़ी पिटी पर भाग निकली। हैड क्लर्क सारस्वत से देर रात तक जूझती रही और सारस्वत गालियाँ देता हुआ कमरे से बाहर हो गया। प्राचार्य अतिरिक्त कक्षा का प्रलोभन देकर बाँहों के घेरे में कस रहे हैं, लड़की को चुम्बन और मनुहार। सिट–पिटा गई लड़की, पकडा–धकड़ी, जद्दोजहद मारपीट, नौंचा–खौरी, मुँह बकोट लिया, दांत गड़ा दिये।

मैत्रेयी ने मूल्यों का ह्यास, नैतिक आदर्शों के पतन का खुला प्रदर्शन किया है। लेखिका के रोमांचक अनुभवों की गाथा इंद्रियाँ कसते कसते कोमल किशोरी कहती है माताजी मेरी शादी कर दो। मन मारने से इच्छाऐं नहीं मरती, मन थमता नहीं पूरी काया नहा जाती है, इंद्रियों का अविराम युद्ध चलता है, और लड़की निर्भय होकर यौनानन्द लेती है। 'गुड़िया भीतर गुड़िया' में जरूरी मुद्दे उठाती है तथा अपना आदर्शमय जीवन ढूंढती है। यह स्त्रो जीवन का महाख्यान है, जिसमें पति की कामवासना मन से ज्यादा तन का समर्पण और उसकी मौन आवृति, कम नहीं, ज्यादा से ज्यादा, जैसे विवाहित जीवन की यही कसौटी हो। ग्रामीण व शहरी संस्कृति से जुड़े मूल्यों की व्यथा–कथा दृष्टव्य है, शहरी स्त्रियों से पहले ग्रामीण स्त्रिया को अपनी गुलामी का एहसास हुआ है। ..... गुलामी के प्रति एहसास ही प्रतिरोध का आरंभ है।

स्त्री मुक्ति व उससे जुड़े मूल्यों व आदर्शों को लेकर मैत्रेयी ने स्त्री पुरूष सम्बन्धों की चर्चा लगभग सभी कथासाहित्य में की है। पितृसत्ता विषय व उससे जुड़े नैतिक मूल्यो की चर्चा 'खुली खिड़कियाँ' उपन्यास की भूमिका में की है। पितृसत्ता रीति–रिवाज एवं कुरीतियों की तस्वीर है जिसमें स्त्री का तबाह जीवन दिखाई देता है। पुरानी रूढ़ियों का विरोध किया है। 'झूलानट' का बालकिशन का व्यक्तित्व रूढ़ी व्यवस्था की दासता में ही दब घुटकर विखण्डित हो चलता है। 'आल्मा कबूतरी' में मंसाराम व्यवस्था की दासता की धुन में ही कबूतरा बस्ती को अपने दो बीघा खेत में उखाड़ फेंकने पर आमादा रहे। 'इदन्नमम्' के विक्रम सिंह व बेटे मकरंद के बीच व्याप्त मूल्यों में नैतिकता का अभाव व्याप्त है। 'चाक' का रणजीत झूलावट का सुमेर 'अगन पारवी' का चंदर आदि नैतिक मूल्यों की प्रतिपुष्टि है।

मूल्य संक्रमण

मूल्य संक्रमण का अर्थ है, मूल्यों में परिवर्तन, पुरातन मूल्यों के स्थान पर नये मूल्यों का आगमन। मैत्रेयी पुष्पा ने कथा साहित्य में मूल्यों का संक्रमण उत्पत्ति के कारण एवं निदान की तस्वोरें अंकित की हैं। रामधारी सिंह 'दिनकर' ने मूल्य संक्रमण को ''शुद्ध कविता की खोज'' में तत्कालीन स्थिति को विस्तार से बताई है, ''व्यावहारिक मनुष्य के लिए ईमानदारी कोई आवश्यक गुण नहीं हैं। प्रेम भावुक लोगों की बीमारी का नाम है। सच्चाई वीरता और बलिदान उतने अच्छे नहीं है, जितनी अच्छी चालाकी हो सकती है।.....मूल्यों का पचड़ा बेकार है। सबसे बड़ा मूल्य वह है जिसके सहारे गाड़ी चलती रहती है।'' मूल्यहीनता, वैचारिक मतभेद, मौलिक अधिकारों का हनन, जाति, धर्म, क्षेत्र वर्ग सम्प्रदाय आदि विषयों पर मूल्यों का हनन ही मूल्य संक्रमण का निश्चित आधार है।

संक्रमण मूल्य की बात कहें तो मैत्रेयी ने वैधव्य स्वयं का जिया हुआ सच है। अन्याय का खुला विरोध स्व घटित संक्रमित घटनाओं के आधार पर करती हैं। विधवा समस्या का हल पुनर्विवाह के रूप में ग्रामीण परिवेश में नारी चेतना को एक नवीन अर्थ प्रदान कर संक्रमित होती नारी को रोका गया है। जिस परिवेश में बेटी तो ''मुख जोहती गइया है रे.....काऊ खूंटा बांध दो। भोली बछिया–सी चल दे हैं, जितै चाहो उतै ही।'' ऐसी स्थितियाँ नारी विद्रोह के 'विमेन लिव' जैसे तेवर की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। फैशन, अधनंगापन, यौनशुचिता का निषेध, पुरानी पीढ़ी को नकार देना, विवाह विच्छेद आदि के लिए पहले सही के मुहावरे इस माहौल में अभी प्रासंगिक नहीं है।

'बेतवा बहती रही' में लेखिका ने व्याप्त विषमता से ग्रसित स्त्री आदर्श एवं नैतिकता का बोझ उठाये कब तक जियेगी आखिर उसका भी अपना वजूद है सत्य तो यह कि उसकी जीवन पद्धति में व्याप्त संक्रमणता जन्म से लेकर मृत्य पर्यंत उसे पीड़ित करती है बहन, माँ व पत्नी तीनों रूपों में नैतिकता, आदर्श, दिखावा, दुलार, प्यार, स्नेह तथा त्याग के कारण संक्रमण के दौर से गुजरने के बाद भी अपनी छाप अविरल गति से छोड़ती है। उर्वशी का पुनर्विवाह के बाद मिलन का क्षण सहसा चेजन देह में संवेदना का तीव्र संचार, रोम–रोम उससे लिपट जाने को आतुर। अपमान उर्वशी का या इस धरती पर जन्मी हर औरत का, पता नहीं भीतर कोई शिला भारी होती जा रही है, घोंटने की। 'चाक' उपन्यास के माध्यम से मूल्य संक्रमण पुरूष की स्त्री के प्रति ओछी सोच का परिणाम है जिससे वे निश्चित और शाश्वत मूल्यों पर प्रहार कर खुद के लिए ही नही वरन् पूरे समाज को संक्रमित कर देता है। सारंग पर पति शक करता है। मैत्रेयी का अनुभव इस विषय में सटीक ही नहीं सुस्पष्ट है कि स्त्री कुछ करे तो कलंकित होती है पुरूष चाहे जो करे। सारंग का पति उसकी जांघों पर लात मारता है, यह मूल्य हीनता नहीं तो क्या है?

समाज में व्याप्त मूल्यों का संक्रमण रिश्तों की टूटन, अमानवीयता परपुरूष गमन, परस्त्रीरत पुरूषों व महिलाओं की आपसी रिश्ते, बर्बर कटुता भरा विधवा जीवन, गरीबी, शोषण एवं व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियाँ अंचलवासियों की मानसिकता का प्रभाव भी मूल्यों को प्रभावित करता है। मूल्य संक्रमण का उदाहरण दृष्टव्य है, 'माँ ने कभी कुनबा नहीं बनाया पर मैत्रेयी की साध किसी निजी कुनबे की माँ बनने की थी। जिस सक्रमण के दौर से मैत्रेयी गुजरी उसमें विसंगतियाँ थी। औरत का दुश्मन उसकी देह नहीं बल्कि मर्द की कुत्सित भावना प्रबल रही है जो नैतिकता से परे भोगवाद की प्रवृति कह सकते है' मैत्रेयी ने बचपन से ठोंकरे खा–खाकर मर्दों की दुसप्रवृतियाँ का शिकार हुई कम उम्र में ही इन विसंगतियों की शिकार मैत्रेयी के मन मूल्यों की नैतिकता का पतन सामने आ गया। छोटे–बड़े स्त्री पुरूष की मर्यादाओं को भूलकर हर व्यक्ति ने अपनी हवस का शिकार बनाना चाहा, किन्तु वह कही दबोची गयी तो ही निकल भागी। ऐसी देव भूमि भारत में जाने कितनी मैत्रेयी इस संक्रमण से ग्रसित है।

मानवीय मूल्यों में एक तथ्य तो पूर्णतः स्पष्ट है कि यह विवेक एवं आस्था का विषय है। इसके अभाव में मूल्यों की स्थापना सुगम नहीं कहा जा सकता है कि आज हम मूल्यहीनता या संक्रमण के युग में जी रहे हैं। जिसमें कुंठा, घुटन, निराशा, अनास्था, असंतोष, दिग्भ्रम, विध्वंस और निषेधादि की प्रधानता है। इस सम्बन्ध में हम इतना ही कह सकते हं कि यदि हम जी रहे है तो जीवन के कुछ न कुछ मूल्य होंगे ही, इसमें मूल्यहीनता, रिक्तता या संक्रमण स्वीकार नहीं है। मूल्यों का एक चक्र सदैव गतिशील है। इसमें अनेक बार संक्रमण की स्थिति भी द्ष्टव्य है, पर इन्हें समग्र रूप से शाश्वत अथवा देशकाल सापेक्ष स्वीकार करना उचित नहीं है। शाश्वत एवं सामयिक दृष्टि से मानव मूल्यों की सीमा निर्धारण भी कठिन कार्य है। स्थूल विभाजन उत्तम है, चतुवग के रूप में भौतिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों की तुलनात्मक ढंग से व्याख्यायित किया है। धर्म, अर्थ, काम को त्रिवर्ग साधन मूल्यों तथा मोक्ष को साध्य मूल्य के अन्तर्गत स्वीकार किया है। मोक्ष प्राप्ति फ्रायड के मूल्यों से कुछ हद तक भिन्नता लिये हुए हैं।

मूल्य ह्रास

पारम्परिक नैतिक मूल्यों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रमुखता दी है। अधिकांश मूल्य युग सापेक्ष होते हैं। प्रस्तुति करते समय वर्ग भेद करें मूल्यों का कार्मिक विकास परिवर्तनशील हैं। इतना ही नहीं, प्रत्येक देशकाल परिस्थितियों में कुछ ऐसी घटनाऐं हो जाया करती है, जिनका प्रभाव मूल्यों पर भी पड़ता है। स्वतंत्रता पूर्व प्रत्येक भारतीय का मूल्य स्वतंत्रता प्राप्ति था। समकालीन परिवेश तथा उसमें आए परिवर्तन में नैतिकता के अभाव का संक्रमण या मूल्यहीनता ने नैतिक, शाश्वत एवं आधुनिक से जुड़े मूल्यों की हीनता का प्रभाव दर्शाया है, जिससे प्रतीत होता है। समकालीन हिन्दी गद्य में मूल्यों का ह्रास कहानियों/उपन्यासों एवं नाटकों में दिनों–दिन बढ़ता पतन होता दिखाई देता है। राष्ट्रीय चेतना, संस्कृति व उससे जुड़े मूल्यों का पतन परिवेश में व्याप्त असमानता, वर्ग–भेद, राजनीतिक दुष्कृत्य का होने वाला प्रभाव वर्तमान साहित्य यथार्थ मूल्यों का होने वाला ह्रास स्पष्ट दर्शाती है।

निष्कर्ष

राजनीतिक बदलाव में मैने कुछ सामाजिक समस्याओं की ओर संकेत किया है। वस्तुतः राजनीतिक व्यवस्था, शासन तंत्र की मूल्यों के परिवर्तन में अहं भूमिका रही है। जनसंख्या वृद्धि महंगाई, बेरोजगारी, बेकारी के कारण भी शाश्वत मूल्यों का ह्रास होता दिखाई दे रहा है। सामाजिक स्तर पर स्त्रियों को मिलने वाले अधिकरों पर प्रहार हो रहा है। बलात्कार, भ्रूणहत्या, शोषण, दहेज, पीड़ा, अनैतिक संबंधों की समस्या तलाक, परपुरूष सम्बन्ध आदि समाज व परम्पराओं से जुड़े अनमेल विवाह, जातिवाद साम्प्रदायिकता से जुड़े मूल्यों का पतन हो रहा है। "वर्तमान जीवन में पुनः पुनः प्राप्त दुखात्मक जीवन स्थितियों में आलोचना के जो सूत्र चलते हैं उनमें भावना के रंग में भोगे हुए जीवन मूल्य होते हैं।

देखने की बात यह है कि मैत्रेयी ने बचपन से जवानी तक धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का प्राप्ति के मार्ग गुरू

जैसे भगवान मानने वाले की नियति इतनी गिरी होगी, यह सत्य नैतिकता का ही पतन है। सारस्वत हैड क्लर्क ''मैं उससे बड़ी रात तक जूझी थी, और सारस्वत गालियां देता हुआ कमरे से बाहर हो गया था। बस का ड्राइवर हॉस्टल, अलीगढ़ में बुड्ढा, माँ की मित्र का लड़का आदि ऐसी घटनाऐं घटित हुई जो स्वयं नैतिकता, का ह्रास है। जिसे स्वयं लेखिका ने भोगा है। 'गुड़ियाँ भीतर गुडियाँ' में मसलन स्त्री वंश समाज की अतार्किक एवं हेय दृष्टि है। पुत्र हीन नारी का नारीत्व सुरक्षित नहीं है। 'एक स्त्री में गुथी तीन पीढ़िया जिन्हें औरत ही आगे ले जा रही है। यह कैसा वंश है। माताजी तुम्हारी बेटी की तीन बेटियाँ तुम्हारे रंग रेशे से बनी हुई। बेटी की भी एक बेटी वासवदत्ता। आज की स्त्री भी स्वयं के नैतिक मूल्यों व आदर्शों का दिखावा करती है। किन्तु वास्तविकता से परे, "मुझे पाउडर को जरूरत नहीं है। वे ही बताते थे कि स्त्री के शरीर की गंध अपने आप में खास है। वेसे भी मेरा रंग गौरा है।

मैत्रेयी का समूचा लेखन सबसे पहले इसी घुटन से दो–चार होता है। फिर उस बुनियादी सामाजिक ईकाई को तरह–तरह से घेरता है जिसे परिवार कहते हैं। स्त्री के आदर्शवादी मूल्यों की आलोचना न करके उनमें परिवर्तन व स्वयं के विचारों में परिवर्तन करने की चर्चा करती है तथा नैतिकता के हो रहे ह्रास को रोकने की कवायद करती है। संक्रमित गतिविधियों से परे समाज में व्याप्त भेद भावों से ऊपर उठकर मानवेत्तर सम्बन्धों को जोड़ने वाले आर्थिक, सामाजिक, धर्मिक एवं राजनीतिक मूल्यों के सराकारों की भी चर्चा करती है। जो मूल्य संक्रमित वासनाओं के तले रौंदे जा रहे हैं, जिनका स्वरूप कुत्सित वासनाजनिक पुरूष वर्ग की घटिया, दकियानूसी विचारधारा का जीता जागता नमूना है। 'आल्मा कबूतरी' के मंसाराम व आत्मा, 'विजन' की नेहा के जरिये अभावों में पली मध्यम वर्गीय चेतना की नब्ज को बखूबी पकड़ कर ह्रास की नवीन चित्रावली प्रदर्शित की है। भौतिकवादी मूल्यों ने अपनापन भी बिसार दिया, नेहा पीहर की बातें भूल कर ससुराल की संपन्नता का आनन्द ले रही है। गृहस्थी के कामों से लेकर सेंटर के दिन भर के प्रोग्रामों में पसीना पसीना होती रहती और रात को नहा धोकर, सुन्दर साइट गाउन में महकती हुई लहराते बाल खोलकर अजय के साथ सुख सेज कर रही होती है, किन्तु व सभी सुखों का भोग करने के बाद भी नैतिकता से परे नहीं होती है। यद्यपि संक्रमण तो आता है, किन्तु मूल्यहीनता होने पर भी कर्तव्य निष्ठा बर्बस कार्य के प्रति उत्तरदायी बनाये रखती है।

मैत्रेयी ने मूल्यों का ह्रास को कारणों की चर्चा की है, किन्तु कहीं कहीं व्यक्ति की विवशता भी होती है, ''पुरूष को ऊँचाईयाँ देकर मार डालती है और स्त्री को अंधेरी अज्ञात निचाईयाँ। लेखिका ने नैतिकता का ह्रास रोकने के लिए स्त्री को अपने मूल्यों की पहचान कराई है जो भरी पूरी स्त्री शख्सियत को महज एक एक कोख में रिड्यूज कर देती है। ''बहू का मतलब है वंश बढ़ाने वाली माता।'' जो मानवीय मूल्यों पर स्त्रियोचित गुणों का लेवल चस्पा कर स्त्री से फ्लोरेंस नेहा को अजय पति न लगकर ''खालिस अपने पापा का बेटा शरण आई सेंटर का उत्तराधिकारी है।'' 'कहीं ईसुरी फाग' स्त्री मूल्य आत्मप्रबोधन की गाथा से ओत–प्रोत है। परिवेश में असंगति ने संस्कार विहीन सत्ता के राजनीतिक पाखण्डों का भण्डा फोड़ कर राजनीतिक मूल्यों के ह्रास को उद्घाटित करने का साहसिक प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

स्त्रियां क्तिन। अष्टाध्यायी 3, 3, 94
रामचरित मानस : इंडियन प्रेस प्रयाग सं., श्यामसुन्दर दास, पृ. 1066
खुली खिड़कियाँ : मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 65
पाश्चात्य काव्यशास्त्र: डॉ. देवेन्द्र शर्मा, पृ. 227
अमरकोश का 90वां संस्करण 1969 पृ. 159 उ?त डॉ उमाकांत गुप्त